International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 21-05-2019; Accepted: 26-06-2019
www.educationjournal.org
Volume 4; Issue 4; July 2019; Page No. 108-113

आगरा जनपद के आगरा नगर की मलिन बस्तियों में निवासित विशिष्ट जाति समुदाय की लड़कियों का शैक्षिक एवं व्यवसायिक स्तर का अध्ययन

रेनू सिंह [1], मनोज कुमार राजपूत [2]
[1, 2] शिक्षा शास्त्र विभाग, जे० एस० विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि मलिन बस्तियों में निवासित विशिष्ट जाति समुदाय की लड़कियों का शैक्षिक एवं व्यवसायिक स्तर क्या है? आगरा नगर महापालिका की मलिन बस्तियों में निवास करने वाले अनुसूचित जाति के 1200 परिवारों को प्रतिदर्श अध्ययन में समाहित किया गया। मलिन बस्तियों में निवासित विशिष्ट जाति समुदाय की लड़कियो की शैक्षिक एवं व्यवसायिक स्तर का जानने हेतु स्वनिर्मित्त साक्षात्कार अनुसूचित का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के निमित्त प्रतिशत का प्रयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट है कि विशिष्ट जाति समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को उच्च पदों पर आसीन करना चाहते हैं। अर्थात उनकी शैक्षिक एवं व्यवसायिक स्तर उच्च है।

मूल शब्द : निवासित विशिष्ट जाति समुदाय, मलिन बस्तियों, अनुसूचित जाति।

प्रस्तावना
महात्मा गांधी ने कहा कि स्त्री ईश्वर की अनमोल कृति है और अपने क्रियाओं में सर्वोपरि है। स्त्री ही विकास की कुंजी है। डा० नफीस सादिक जो कि यू० एन० एफ०पी० ए० के फार्मर एग्जीक्यूटिव थे। उन्होंने कहा कि स्त्री ही विकास का हदय है। वे ही परिवर्तन की सूचक है। वे ही विकास का केन्द्र है। विश्व जनसंख्या आयोग की आख्या अनुसार '' एक माँ की शिक्षा अपने परिवार को छोटा करने और बच्चों को जीवित रखने में एक महत्वपूर्ण कारक हैं।''
महिलाये ही विकास और प्रगति की मुख्यतया है। महिलायें ही परिवर्तन की धारक है। शिक्षा इस परिवर्तन हेतु मुख्य अस्त्र के समान है। जिससे कि राष्ट्रीय विकास सम्भव है। यह सत्य है। कि यदि तुम एक लड़के को शिक्षित करते हो तो वे एक व्यक्ति की शिक्षा है। यदि तुम लड़की को शिक्षित करते हो तो वह पूरे देश समाज और परिवार की शिक्षा है। शिक्षा द्वारा ही अनभिज्ञता व अज्ञान का अंधकार दूर होता है। नेपोलियन ने ठीक ही कहा है ''मुझे तुम शिक्षित माता दो मैं तुम्हें सभ्य समाज के जन्म का वादा करता हूँ। इतिहास बताता है। कि संसार में जितने भी युग प्रवर्तक महापुरूष हुए हैं उनके जीवन निर्माण में उनकी माताओं का विशेष हाथ रहा है।
अनुसूचित वर्ग के व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में देश की अन्य गैर अनुसूचित जातियों की तुलना में काफी पीछे है। यह भारत के शिक्षाविदों एवं शैक्षिक विकास से सम्बद्व सभी व्यक्तियों के सम्मुख एक गम्भीर समस्या है। क्योंकि इस वर्ग की महिलाओं के शैक्षिक पिछड़ेपन के कई कारण हैं। जिनमें आर्थिक कारणों के साथ–साथ जातीय भेदभाव तथा अस्पृश्यता जैसे अनेक सामाजिक कारण भी विद्यमान है। यद्यपि अनुसूचित वर्ग के शैक्षिक आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अथक प्रयास किये गये हैं। जिनमें प्रमुख रूप कबीरदास रैदास, गुरूनानक, ज्योतिबाराव फूले, रामा स्वामी पेरियार, छत्रपति शाहू जी महाराज, महात्मा गांधी, डा० भीमराव अम्बेडकर आदि के योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
शिक्षा एवं राष्ट्र के विकास के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध है एक लम्बे समय तक महिलाओं का बहुतायत में अशिक्षित होने का प्रभाव देश के विकास पर नकारात्मक पड़ा है। वास्तव में आज भी 6 से 14 वर्ष आयु की 39 बालिकाएं ही स्कूल जाती है। शेष या तो स्कूल जाती ही नहीं है। या फिर दाखिला लेने के तीन चार वर्षो बाद ही स्कूल जाना बंद कर लेती है एक अध्ययन के अनुसार यदि गांवों में 100 बालिकाएं पहली कक्षा में है तो पांचवी में 40, 8वी में 18, 10वीं में 9 तथा 12वीं में मात्र एक ही रह जाती हैं। अनेक समाज शास्त्रीय अध्ययन बताते हैं। कि लगभग 95 प्रतिशत बालिकाओं को 9 वर्ष तथा इससे भी कम आयु से श्रम/साध्य कार्यो में लगा दिया जाता है।
उपर्युक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि प्रगति की गति विशेषतः संविधान की अपेक्षाओं को दृष्टिगत रखते हुए बहुत धीमी हो रही है। इसका प्रमुख कारण यह है कि अनुसूचित जातियों के कल्याण एवं प्रगति के लिए विशेष रूप से अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए शिक्षा के महत्व को पूरी तरह से समझा नहीं गया है। अतः देश की सर्वागीण प्रगति समस्त पिछड़े वर्गो को ऊँचा उठाने से ही सम्भव है।
वस्तुतः अनुसूचित व दलित वर्ग में सबसे कम लड़कियाँ विद्यालय जाती हैं। इससे शैक्षिक जगत में अपव्यय व अवरोधन की समस्या बढ़ी है। उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के आलोक में उत्तर प्रदेश के संदर्भ में ऐसे शोध अध्ययन को किये जाने की आवश्यकता अनुभूत की गयी जिसमें विशिष्ट जाति समुदाय की लड़कियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक स्तर क्या है ? को जाना जाए। इसी प्रश्न के उत्तर को जानने हेतु ही प्रस्तुत शोध के निर्मित प्रस्तुत समस्या का चयन किया है।

उद्देश्य
आगरा जनपद की मलिन बस्तियों में निवासित विशिष्ट जाति समुदाय की लड़कियो की शैक्षिक एवं व्यवसायिक स्तर का अध्ययन।

विधि
शोध अध्ययन हेतु '' वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि '' का अनुप्रयोग किया गया।

प्रतिदर्श चयन

आगरा जनपद में 262 कुल मलिन बस्तियाँ सम्मिलित है। आगरा जनपद की उक्त मलिन बस्तियों में निवास करने वाले परिवारों की जनसंख्या में से प्रतिदर्श के निर्मित केवल दलित वर्ग व अनुसूचित जाति (वाल्मीकि, जाटव, डोम, मुस्लिम दलित, रैदास, लौहानिया, खटीक, शिल्पकार, कोरी, धोबी, कंजड़) आदि को ही अध्ययन इकाईयों के रूप में सम्मिलित किया गया है। अन्य जातियों को नहीं। अन्तिम रूप से चयनित 1200 इकाईयों का प्रतिदर्श अध्ययन में समाहित किया गया है।

उपकरण

वर्तमान अध्ययन में स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग मलिन बस्तियों में निवासित विशिष्ट जाति समुदाय की लड़कियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक स्तर को जानने हेतु किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधि

संकलित प्रदत्तों को विश्लेषण के निमित्त प्रदत्तों की प्रकृति के अनुरूप प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

विशिष्ट समुदाय के अभिभावकों की अपनी लड़कियों के सन्दर्भ में क्या शैक्षिक एवं व्यावसायिक स्तर है, इस संदर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण से पूर्व यह जानने का प्रयास किया गया कि मलिन वस्तियों में निवास करने वाले अभिभावक क्या अपनी लड़कियों को शिक्षित करवाने के उपरान्त इनसें कोई व्यवसाय कराना चाहते है? क्या उनकी शिक्षित लड़कियां अभिभावकों की भावना के अनुरूप कोई व्यवसाय करना चाहती है? इस सन्दर्भ विशेष के परिप्रेक्ष्य में जो परिणाम हुये उन्हें तालिका–1 में प्रस्तुत किया गया है।

कथन –1 ''लड़कियो को नौकरी अथवा कोई व्यवसाय कराना चाहते/चाहती हैं।'' के प्रति मलिन बस्तियों में निवासित विशिष्ट जातियों के जाति अनुसार विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक रूप से रैदास (67.74%) तथा बाल्मीकि (61.11%), समुदाय के अभिभावक लड़कियों को व्यवसाय कराना चाहते है इसके पश्चात् जाटव (58.63%), तथा मुस्लिम दलित (57.14%), खटीक (56.66%), धोबी (55.55%), डोम (53.09%), अभिभावकों ने भी रैदास, तथा बाल्मीकि समुदाय के समान ही सकारात्मक मत व्यक्त दिया जबकि सर्वाधिक रूप से लोहनिया (73.21%), समुदाय के अभिभावक ऐसे है जो लड़कियो को नौकरी अथवा व्यवसाय करना नही चाहते है इसी प्रकार द्वितीय स्थान पर कोरी (66.66%), तृतीय शिल्पकार (63.88%), चतुर्थ स्थान पर कंजड (54%), व पंचम स्थान पर डोम (46.90%), समुदाय के अभिभावक भी अपनी लड़कियो को नौकरी अथवा व्यवसाय नहीं कराना चाहते है। अतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि समय परिवर्तन व शिक्षा के महत्व का समझ आज दलित वर्ग के लोग (55%), अभिभावक अपनी लड़कियो को नौकरी अथवा व्यवसाय कराना चाहते है।

कथन – 2 ''आपकी लड़की कोई व्यवसाय करना चाहती है।'' के प्रति सभी जाति समुदाय के अभिभावकों के अभिमत में भिन्नता पायी गयी है। मलिन बस्तियो में रहने वाले विशिष्ट जाति समुदाय की लगभग (61%), लड़कियां व्यवसाय करना चाहती है केवल (39%), ही ऐसी लड़कियां है जो व्यवसाय करना नही चाहती है अर्थात् वे अपने व्यवसाय का कोई भी व्यवसाय अन्य व्यवसाय की अपेक्षा अपनी लड़कियों से कराना पसंद करते है। जाति विश्लेषण से विदित होता है सर्वाधिक रूप से जाटव समुदाय (70.68%) की लड़कियां व्यवसाय करना चाहती है। यह समुदाय शिक्षा व व्यवसाय के प्रति सजग है। तत्पश्चात् लोहानिया (62.5%), शिल्पकार (61.11%), मु0दलित (60%), रैदास (58.06%) बाल्मीकि (55.55%), कंजड़ (54%), कोरी (50%), डोम (48.67%), तथा खटीक (43.33%), समुदाय की लड़कियाँ भी व्यवसाय कराना चाहती है। अर्थात इन सभी दलित समुदायों की लड़कियों को व्यवसाय कराने प्रति अभिमतों में पर्याप्त अन्तर पाया। सर्वाधिक रूप से धोबी (60%), समुदाय की लड़किया व्यवसाय करना नहीं चाहती हैं। जबकि खटीक (56.66), डोम (51.32%), कोरी (50%), कंजड़ (46%), बाल्मीकि (44.44%), रैदास (41.93%), मुस्लिम दलित (40%), समुदाय की लड़कियों व्यवसाय करना नहीं चाहती हैं। समग्र रूप से विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि दलित समुदाय की (58%), से अधिक लड़कियाँ व्यवसाय करना चाहती हैं। अर्थात आज दलित समुदाय की लड़कियाँ नौकरी अथवा व्यवसाय के प्रति सचेत हैं।

कथन 3 :– ''आप अपनी लड़कियों से किस प्रकार का व्यवसाय कराना पसंद करेंगें।'' के प्रति मलिन बस्तियों में रहने वाले विशिष्ट जाति समुदाय के अभिभावकों के मतों में पर्याप्त विभिन्नता पायी गयी। विशिष्ट जाति समूह के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को स्वयं का व्यवसाय (17.25%), कराना पसंद करेंगे अर्थात् वे अपने व्यवसाय का कोई भी व्यवसाय अन्य व्यवसायों की अपेक्षा अपनी लड़की से कराना ज्यादा पसंद करते हैं। द्वितीय स्थान पर विशिष्ट जाति समुदाय के अभिभावक अपनी लड़कियों से स्कूल में शिक्षण (12.83%), कार्य कराना पसंद करते हैं। तृतीया स्थान पर पी०सी० ओ० संचालिका (7.91%), चतुर्थ स्थान पर टेलीफोन ओपरेटर (7%), पंचम स्थानपर ऑफिस क्लर्क (6.66%), षष्ठम स्थान पर ब्यूटीशियन (6.5%), सप्तम स्थान पर नर्स (5.66%), अष्टम स्थान पर रिसेप्सनिष्ट (5.58%), नवम स्थान पर दरोगा (5.5%), दसम स्थान पर विमान परिचालिका (4.41%), ग्यारह स्थान पर कम्प्यूटर संचालिका (3.75%), बारह स्थान पर पुलिस (3.33%), तेरह स्थान पर विमान परिचारिका (एअर होस्ट) (2.5%), चौदहवाँ स्थान पर मजिस्ट्रेट (2.25%), पन्द्रह स्थान पर जज (1.91%), सोलहवें स्थान पर कमिश्नर (1.41%), आदि व्यवसाय कराना पसंद करते हैं। दलित समुदायों के सर्वाधिक कम (0.41%), पत्रकार तथा इंजीनियर्स बनाना पसंद करते हैं।

जाति अनुसार विश्लेषण से विदित होता है बाल्मीकि समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियाँ को विमान परिचालिका (15. 55%), बनाना चाहते हैं इसके पश्चात ऑफिस क्लर्क (13.33:), कम्प्यूटर संचालिका (13.33%), स्वयं का व्यवसाय (10%), दरोगा (10%), पुलिस (7.7%), पी.सी.ओ. संचालिका (7.7%), नर्स (4. 44%), स्कूल में शिक्षक (4.44%), टेलीफोन आपरेटर (4.44%), ब्यूटीशियन (2.22%), कमिश्नर (2.22%), जज (2.22%), कारखाने में मैनेजर (2.22%), बाल्मीकि समुदाय के सर्वाधिक विमान परिचालिका तथा कम जज कारखाने में मैनेजर तथा ब्यूटीशियन का कार्य कराना पसंद करेंगे।

जाति अनुसार विश्लेषण से विदित होता है जाटव समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को स्वयं का व्यवसाय (17. 46%), स्कूल में शिक्षक (12.44%), रिसेप्सनिष्ट (10.44%), टेलीफोन आपरेटर (10.44%), दरोगा (7.63%), नर्स (6.62%), ब्यूटीशियन (6.42%), ऑफिस क्लर्क (4.41%), जज (3.41%), मजिस्ट्रेट (3.41%), विमान परिचालिका (3.21%), पी.सी.ओ. संचालिका (3.21%), आई.ए०एस० अधिकारी (2.40%), जिला अधिकारी (2.40%), कारखाने में मैनेजर (2.40%), पी०सी०एस० अधिकारी (1.40%), जाटव समुदाय के सर्वाधिक स्वयं का व्यवसाय तथा कम पी.सी. एस. अधिकारी का कार्य कराना पसंद करते हैं।

तालिका :– विशिष्ट जाति समुदाय की लड़कियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक स्तर का अध्ययन।

क्रम	कथन	प्रत्युत्तर	वाल्मीकि N=180	जाटव N=498	डोंम N=113	मु0दलित N=70	रैदास N=62	लोहानियां N=56	खटीक N=60	शिल्पकार N=36	कोरी N=30	धोबी N=45	कंजड़ N=50	योग N=1200
1	लड़की को नौकरी अथवा कोई व्यवसाय कराना/चाहती है।	हॉ	110 61.11%	292 58.63%	60 53.09%	40 57.14%	42 67.74%	15 26.78%	34 56.66%	13 36.11%	10 33.33%	25 55.55%	23 46%	660 55%
		नही	70 38.88%	206 41.36%	53 46.90%	30 42.85%	20 32.25%	41 73.21%	26 43.33%	23 63.88%	20 66.67%	20 44.45%	27 54%	540 45%
2	आपकी लड़की कोई व्यवसाय करना चाहते है।	हॉ	100 55.55%	352 70.68%	55 48.67%	42 60%	36 58.06%	35 62.5%	26 43.33%	22 61.11%	15 50%	18 40%	27 54%	730 60.83%
		नही	80 44.44%	146 29.31%	58 51.32%	28 40%	26 41.93%	21 37.5%	34 56.66%	14 38.88%	15 50%	27 60%	23 46%	470 39.17%

आप अपनी लड़की से किस प्रकार का व्ययसाय कराना पसन्द करेंगे।

क्रम	कथन	वाल्मीकि N=180	जाटव N=498	डोंम N=113	मु0दलित N=70	रैदास N=62	लोहानियां N=56	खटीक N=60	शिल्पकार N=36	कोरी N=30	धोबी N=45	कंजड़ N=45	योग N=1200
1	ब्यूटीशियन	4 2.22%	32 6.42%		6 8.57%		7 12.5%	6 10%	9 25%	4 13.33%	7 15.55%		78 6.5%
2	रिशेप्सनिस्ट		52 10.44%		4 5.71%	4 6.45%							67 5.58%
3	विमान परिचारिका		16 3.21							3 10%	4 8.88%	4 8%	30 2.5%
4	पी.सी.ओ. संचालिका	14 7-77%	16 3.21%	26 23.00%		3 4.83%	5 8.92%	10 16.66%	6 16.66%	5 16.66%	5 11.11%	4 8%	95 7.91%
5	विमान परिचारिका ऐयरहोस्ट	28 15.55%			10 14.28%						4 8.88%		53 4.41%
6	इन्कमटैक्स अधिकारी						5 8.92%						13 1.08%
7	कमिश्नर	4 2.22%										4 8%	17 1.41%
8	टेलीफोन ऑपरेटर	8 4.44%	52 10.44%		5 7.14%			6 10%		4 13.33%		4 8%	84 7%
9	स्कूल में शिक्षक	8 4.44%	62 12.44%	16 14.15%	15 21.42%	18 29.03%	10 17.85%	6 10%	7 19.44%	3 10%	7 15.55%	3 6%	154 12.83%
10	स्वयं का व्यवसाय	18 10%	87 17.46%	14 12.38%	10 14.28%	18 29.03%	22 39.28%	22 36.66%		7 23.33%	3 6.66%	4 8%	207 7.25%
11	जज	4 2.22%	17 3.41%									4 8%	23 1.91

12	मजिस्ट्रेट		17 3.41%			8 12.90%			3 8.33%	2 6.66%	3 6.66%		27 2.25%
13	आई.ए.एस. अधिकारी		12 2.40%										10 0.83%
14	जिला अधिकारी		12 2.40%										12 1%
15	ऑफिस क्लर्क	24 13.33%	22 4.41%	12 10.61%	5 7.14%	7 11.29%	3 5.35%	3 5%	4 11.11%	2 6.66%	3 6.66%	3 6%	80 6.66%
16	कारखाने में मैनेजर	4 2.22%	12 2.40%										
17	कम्प्यूटर संचालिका	24 13.33%			10 14.28%			5 8.33%	3 8.33%		2 4.44%	3 6%	45 3.75%
18	पाइलट												
19	सैन्य अधिकारी			7 6.19%								3 6%	7 0.58%
20	पी.सी.एस. अधिकारी		7 1.40%										6 0.5%

कम	कथन	प्रति उत्तर	वाल्मीक N=180	जाटव N=480	डोंम N=113	मु0दलित N=70	रैदास N=62	लोहानियां N=56	खटीक N=60	शिल्पकार N=36	कोरी N=30	धोबी N=45	कंजण N=45	योग N=1200
21	कस्टम अधिकारी													
22	नर्स		8 4.44%	33 6.62%	18 15.92%	2 2.85%		2 3.57%	2 3.33%	2 5.55%		2 4.44%		68 5.66%
23	दरोगा		18 10%	38 7.63%		3 4.28%				2 5.55%			5 10%	66 5.5%
24	पुलिस		14 7.77%		20 17.69%		4 6.45%	2 3.57%				2 4.44%		40 3.33%
25	इंजीनियर											3 6.66%		5 041%
26	वकील			6 1.20%									3 6%	8 0.66%
27	पत्रकार			5 1.00%									6 12%	5 0.41%
28	अन्य													

जाति अनुसार विश्लेषण से विदित होता है डोम समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को पी.सी.ओं संचालिका (23.00%), पुलिस (17.69%), नर्स (15.92%), स्कूल में शिक्षक (14.15%), स्वंय का व्यवसाय (12.38%), ऑफिस क्लर्क (10. 61%), सैन्य अधिकारी (6.19%), डोम समुदाय के सर्वाधिक पी.सी. ओं संचालिका तथा कम सैन्य अधिकारी का कार्य कराना पसंद करेगे।

जाति अनुसार विश्लेषण से विदित होता है मुस्लिम दलित समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को स्कूल में शिक्षक (21.42%), स्वंय का व्यवसाय (14.28%), कम्प्यूटर संचालिका (14.28%) विमान परिचालिका (14.28%), ब्यूटीशियन (8.57), टेलीफोन आपरेटर (7.14%), ऑफिस क्लर्क (7.14%), रिसेप्सनिष्ट (5.71%), दरोगा (4.28%), नर्स (2.85%), मुस्लिम दलित के सर्वाधिक स्कूल में शिक्षक तथा कम नर्स (2.85%), का कार्य कराना पसंद करते हैं।

जाति अनुसार विश्लेषण से विदित होता है रैदास समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को स्कूल में शिक्षक (29. 03%), तथा स्वयं का व्यवसाय (29.03%), मजिस्ट्रेट (11.29%), ऑफिस क्लर्क (11.19%), पुलिस (6.45%), रिसेप्सनिष्ट (6.45%), रैदास समुदाय के सर्वाधिक स्कूल में शिक्षक तथा कम रिसेप्सनिष्ट, पुलिस का कार्य कराना पसंद करते हैं।

जाति के अनुसार विश्लेषण से विदित होता है लोहानिया समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को स्वंय का व्यवसाय (39.28%), स्कूल में शिक्षक (17.85%), ब्यूटीशियन (12.5%), पी. सी.ओ. संचालिका (8.92%), इंकमटैक्स अधिकारी (8.92%), ऑफिस क्लर्क (5.35), नर्स (3.57%), पुलिस (3.57%), लोहानिया समुदाय के सर्वाधिक स्वयं का व्यवसाय तथा कम नर्स पुलिस का कार्य कराना पसंद करेंगे।

जाति के अनुसार विश्लेषण से विदित होता है खटीक समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को स्वयं का व्यवसाय (36. 66%), पी.सी.ओ. संचालिका (16.66%), ब्यूटीशियन (10%), टेलीफोन आपरेटर (10%), स्कूल में शिक्षक (10%) कम्प्यूटर संचालिका (8.33%), ऑफिस क्लर्क (5%), नर्स (3.33%), खटीक समुदाय के सर्वाधिक पी.सी.ओ. संचालिका तथा कम नर्स का कार्य कराना पसंद करेंगे।

जाति के अनुसार विश्लेषण से विदित होता है। शिल्पकार समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को ब्यूटीशियन (25%), स्कूल में शिक्षक (19.44%), पी.सी.ओ. संचालिका (16. 66%), ऑफिस क्लर्क (11.11%), मजिस्ट्रेट (8.33%), कम्प्यूटर संचालिका (8.33%), नर्स (5.55%) दरोगा (5.55%), शिल्पकार समुदाय के सर्वाधिक ब्यूटीशियन तथा कम नर्स, दरोगा का कार्य कराना पसंद करेंगे।

जाति के अनुसार विश्लेषण से विदित होता है कोरी समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को स्वंय का व्यवसाय (27. 33%), पी.सी.ओ. संचालिका (16.66%), ब्यूटीशियन (13.33%), टेलीफोन आपरेटर (13.33%), स्कूल में शिक्षक (10%), विमान परिचारिका (10%), मजिस्ट्रेट (6.66%), ऑफिस क्लर्क (6.66%) कोरी समुदाय के सर्वाधिक स्वंय का व्यवसाय तथा कम ऑफिस क्लर्क का कार्य कराना पसंद करेगें।

जाति अनुसार विश्लेषण से विदित होता है कि धोबी समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को ब्यूटीशियन (15.55%), स्कूल में शिक्षक (15.55%), पी.सी.ओ. संचाालिका (11.11%), विमान परिचालिका (8.88%) स्वयं का व्यवसाय (6.66%), मजिस्ट्रेट (6.66%), ऑफिस क्लर्क (6.66%), इंजीनियर्स (6.66%), नर्स (4.44%) कम्प्यूटर संचालिका (4.44%), पुलिस (4.44%), धोबी समुदाय के सर्वाधिक ब्यूटीशियन तथा कम नर्स, पुलिस, कम्प्यूटर संचालिका का कार्य कराना पसंद करेगे।

जाति के अनुसार विश्लेषण से विदित होता है कंजड़ समुदाय के सर्वाधिक अभिभावक अपनी लड़कियों को पत्रकार (12%), दरोगा (10%), विमान परिचारिका (8%), पी.सी.ओ. संचालिका (8%), टेलीफोन आपरेटर (8%), स्वंय का व्यवसाय (8%), जज (8%), स्कूल में शिक्षक (6%), ऑफिस क्लर्क (6%), कम्प्यूटर परिचालिका (6%), सैन्य अधिकारी (6%), वकील (6%), कंजड़ समुदाय के सर्वाधिक पत्रकार तथा कम स्कूल में शिक्षक, ऑफिस क्लर्क, कम्प्यूटर, परिचालिका सैन्य अधिकारी वकील का कार्य कराना पसंद करेंगे।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

शोध अध्ययन क परिणामों से स्पष्ट होता है कि मलिन वस्तियों में रहने वाले दलित अभिभावकों की लड़कियो का शैक्षिक विकास, सामाजिक विकास तथा शैक्षिक नीति में महत्वूर्ण भूमिका निर्वाह करते है।

शोध से ज्ञात हुआ है कि मलिन बस्तियों में दलित अभिभावकों की शैक्षिक स्तर व व्यवसायिक स्थिति संतोषजनक नही है। मलिन बस्तियों में दलित व्यक्तियों के लिए शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत मार्गदर्शन के कार्यक्रमों की व्यवस्था की जा रही है अशिक्षित व्यक्तियों के लिए सामूहिक व्यवस्था की जा रही है। बालिकाओं के शैक्षिक निहितार्थ में योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका है अशिक्षित माता व पिता को निर्देशन व परामर्श देना अति आवश्यक है। अध्ययन परिणामों से स्पष्ट है कि मलिन बस्तियों में निवारित विशिष्ट जाति समुदाय की लड़कियों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति को सकारात्मक रूप से बनाने हेतु प्रयास किये जा रहे है।

जन संचार साधनों का उपयोग, लोक कलाकारों नुक्कड़ नाटक, लड़कियों की महत्पूर्ण शिक्षा से सम्बन्धित नौटंकी आदि उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आयोजन कराना चाहिए।

प्रायः देखा गया है कि भारतीय समाज में मलिन बस्तियों के अभिभावक को अपनी लड़कियो को विद्यालय भेजने की प्रेरणा व प्रोत्साहन मिले। आदि बसी हुई मलिन बस्तियों के लोगों धार्मिक भावना अथवा निम्न समुदाय की पहचान अथवा पूजा स्थल (मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारा आदि) का निर्माण करते है। समुदाय और समाज के लोग धार्मिक स्थलों के निर्माण के स्थान पर अपने समाज के बच्चों के स्कूल की स्थापना करे, तो यह श्रेष्ठ श्रेयस्कर होगा। इसी कारण ही सम्पूर्ण समाज में साथरता की दर में अवश्य ही वृद्धि होगी। इसी लिए हमें समाज के कर्णधारो, सुधारको, मुखियाओं, महात्माओं आदि को सक्रिय होना चाहिए एवं सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, अर्चना (1992), ''लखनऊ शहर के माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र वर्ग की सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन, अप्रकाशित शोधग्रन्थ (शिक्षा), लखनऊ विश्वविद्यालय।
2. अय्यर, आर.के. बैद्यनाथ (1999) ''बुनियादी शिक्षा और मानवाधिकार'' परिप्रेक्ष्य, अंक 1.2 अप्रैल–अगस्त 2007
3. गुड़बार, स्केट्स (1954), मैथड्स ऑफ रिसर्च/न्ययार्क : एप्लेटन सैन्चुरी क्राफ्ट्स।
4. गुप्ता, मधु (1994), ष्अनुसूचित जाति एंव स्वर्ण जाति के प्रथम एवं प्रथमोत्तर शिक्षित पीढ़ी के विद्यार्थियों की शैक्षिक, उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कतिपय मनोवैज्ञानिक कारको का तुलनात्मक अध्ययन''। अप्रकाशित शोधग्रन्थ (शिक्षा) डी.ई.आई. विश्वविद्यालय, दयालबाग आगरा।
5. चिटनस, एस (1981), **''**अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक एवं सामाजिक समस्याओं का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन**''**। अप्रकाशित शोधग्रन्थ, बम्बई।

6. नत्थूलाल (1971), ''अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन'' अप्रकाशित शोधग्रन्थ, आगरा विश्वविद्यालय आगरा।
7. नई शिक्षा नीति (1986), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
8. मानव संसाधन विकास मंत्रालय सम्बन्धी रिपोर्ट (1992)
9. केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की नीति, नई दिल्ली, शिक्षा विभाग, भारत सरकार।
10. रस्तोगी, एस.पी. (1977) उत्तर प्रदेश के हरिजन वर्ग की छात्र–छात्राओं के चन्हुमुखी विकास हेतु। भारतीय संविधान में निहित संवैधानिक अधिकार के अभिव्यक्त किये गये अभिमतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' अप्रकाशित शोधग्रन्थ विश्वविद्यालय आगरा।
11. डॉ0 एस0एस0 कुशवाह एवं मनोज कुमार राजपूत, डेली वरेटिव रिचर्स बाल्यूम – 15 इशु.164.167 जुलाई – सितम्बर (2012)